P.G. 2nd sem
18-20 session

Dr Kumari Manju
H.O.D. Eco Depart
R.N.C.

Topic
Public goods, private goods and Merit goods.

लोक वस्तु से तात्पर्य उस वस्तु से है जिसका लाभ अविभाज्य होता है, तथा सम्पूर्ण समाज को प्राप्त होता है। चाहे कोई खास व्यक्ति इस वस्तु का उपयोग करना चाहे या न चाहे उदाहरणार्थ वह जनस्वास्थ्य सेवा, जिससे चेचक का उन्मूलन होता है सभी के स्वास्थ्य की रक्षा करती है केवल उन्हीं की नहीं जिन्होंने चेचक का टीका लगाने के लिए भुगतान किया है। इसके विपरीत होती एक निजी वस्तु है जिसका उपयोग मात्र एक व्यक्ति करता है जिसने इसकी कीमत अदा की है तो कोई दूसरा उपभोग नहीं कर सकता।
इस प्रकार Public goods उन वस्तुओं जिनके उत्पादन से External Benefit का सृजन होता है और इस लाभ का उपभोग वे करते हैं जो इसके लिए भुगतान नहीं करते और इस लाभ का विस्तार हो जाता है। इस विस्तार के प्रभाव को Spill-over Effects अर्थात् लाभ का विस्तार कहा जाता है और इन वस्तुओं का उत्पादक बाह्य लाभ प्रदान करने के लिए कहा जाता है। इसके दो कारण हैं — (1) कारण यह है कि ऐसी वस्तु कोई व्यक्ति नहीं ले सकता है। लाभ पर सम्पत्ति का अधिकार स्थापित नहीं किया जा सकता है। (2) दूसरा कारण यह है कि लोक वस्तुओं का विभाजन न होना। अतः इनके लिए कीमत नहीं ली जा सकती है। परिणाम यह होता है कि उन व्यक्तियों को भी इन वस्तुओं के उपभोग से वंचित नहीं किया जा सकता है जो कीमत का भुगतान नहीं करते हैं।
जिन वस्तुओं के उत्पादन से बाह्य लाभ के स्थान पर बाह्य हानि होती है उन्हें लोक या सार्वजनिक खराब वस्तु की संज्ञा दी जाती है। लोक हानि उन क्रियाओं से या व्यापार जिनके उत्पादन या उपभोग से उन सभी बाह्य लागतों का सृजन होता है जो जनसंख्या के एक बड़े भाग को प्रभावित करती है। उदाहरणस्वरूप कारखाने की चिमनी से निकलने वाली धुएं को ले सकते हैं जिससे आस-पास के लोगों को कपड़े की धुलाई पर अधिक खर्च करना पड़ता है जिसे मिल मालिक द्वारा इस खर्च का भरपाई नहीं किया जाता है।
Musgrave ने लोक तथा निजी वस्तुओं के अन्तर को स्पष्ट करने के लिए दो आधारों को चुना है यथा (1) आवश्यकता के निर्धारण का आधार तथा आवश्यकता की प्रकृति (11) उपभोग में वर्जन (Exclusion in Consumption) तथा प्रतिद्वन्द्विता की उपस्थिति या अनुपस्थिति (persance or absence of Rival)
(1) आवश्यकता की किस्में - निजी एवं लोक वस्तुओं में अन्तर केवल इस बात से लिया जाता है कि लाभ आन्तरिक है या बाह्य। दोनों में अन्तर इस बात का होता है कि दोनों स्थितियों में वस्तु के उत्पादन एवं उपभोग का निर्धारण आवश्यकता के आधार पर किया जाता है।
(2) वर्जन का सिद्धान्त एवं उपभोग में प्रतिद्वन्द्विता (Exclusion principle and Rival Consumption) - निजी वस्तुओं का उत्पादन बाजार सिद्धान्त तथा आर्थिक निपुणता (Economic efficiency) के अनुसार होता है। बाजार अर्थव्यवस्था दो सिद्धान्तों पर- (1) वर्जन का सिद्धान्त तथा (2) प्रकट अधिमान (Revealed Preference) आधारित होती है।
वर्जन के सिद्धान्त के अनुसार केवल वे ही किसी वस्तु का उपभोग कर सकते हैं जो इसके लिए बाजार कीमत का भुगतान करते हैं। इस प्रकार

A निजी वस्तु X का उपभोग करता है क्योंकि उसने इसे प्राप्त करने के लिए कीमत चुकाई है और B उसके उपभोग से वंचित रह जाता है — क्योंकि B ने कीमत का भुगतान नहीं किया है। वर्जन के लिए आवश्यक है कि लोगों की सम्पत्ति पर कानूनी अधिकार प्राप्त हो।

वर्जन सिद्धान्त के अन्तर्गत बाजार नीलामी व्यवस्था की तरह कार्य करता है। उपभोक्ता वस्तु के लिए बोली लगाता है और इस प्रक्रिया में अपनी अधिमान्यता का प्रकट करता है। इससे उत्पादकों को संकेत मिलता है और वह उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करता है जिन्हें उपभोक्ता चाहते हैं। स्पष्ट है कि उपभोक्ता द्वारा ही बाजार [illegible] किया जाता है।

<u>सामाजिक वस्तुएँ (Public goods)</u> = "सामाजिक वस्तु वह है जिसका उत्पादन होता है उतनी ही मात्रा में सभी उपभोक्ता मिलकर समान उपभोग करते हैं।" "A pure public goods as one for which inequilibrium the quantity produced is equal to the quantity consumed for all individuals and each individual consumes the same amount." Paul Samuelson

जैसे उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाए कि किसी व्यक्ति द्वारा एक कमरे में कैद है उन व्यक्तियों द्वारा लिए गए निर्णय सिर्फ उन्हीं लोगों पर लागू है, किसी अन्य पर नहीं। इस कमरे में रहने वाले व्यक्ति को प्रतिदिन एक निश्चित मात्रा में [illegible] प्राप्त होते हैं। रोटी को लोग भोजन के लिए तथा [illegible] कमरों को गरम करने के लिए प्राप्त होते हैं। रोटी निजी वस्तु मान ली जाएगी क्योंकि इन्हें टुकड़ों में विभाजित कर उपभोक्ताओं में बाँटा जा सकता है सभी व्यक्तियों द्वारा उपभोग की गई रोटियों का योग उत्पादन के बराबर होगा अतः यदि किसी दिन एक व्यक्ति के हिस्से की रोटियों की कुल मात्रा के बराबर होगा। अतः यदि किसी दिन एक व्यक्ति के हिस्से की रोटी खो जाए तो उसी के लिए कम रोटी उपलब्ध होगी यह भी संभव है कि इस कमरे के निवासी अपने अधिमान के अनुसार रोटी का विभाजन करें।

कोयला कमरे को निश्चित तापमान में गरम किया जाता है। अलग-अलग व्यक्तियों के मध्य बाँटा नहीं जा सकता। सभी व्यक्ति एक तापमान में गर्मी का उपभोग करेंगे। उनके लिए अलग-अलग तापमान में गर्मी का उपभोग करेंगे। उनके लिए अलग-अलग तापमान में गर्मी का उपभोग करना संभव नहीं है।

<u>(Private Goods)</u> निजी वस्तुएँ: निजी वस्तुओं से आशय ऐसी वस्तुओं से है, जो उपभोग में प्रतियोगी होती हैं और जिनके लिए उचित मूल्य का भुगतान करना होता है। प्रयोग में प्रतियोगी का अर्थ यह है कि यदि उस वस्तु का कुछ व्यक्तियों द्वारा प्रयोग करने पर अन्य व्यक्तियों के लिए उस वस्तु की उपलब्धता या उपयोगिता में कमी हो जाती है। निजी वस्तुओं का बाजार मूल्य निर्धारित होता है और उन्हीं व्यक्तियों को ये वस्तुएँ उपलब्ध हो पाती हैं जो उस मूल्य को देने की क्षमता रखते हैं और उस वस्तु का प्रयोग करने के लिए तैयार रहते हैं।

<u>सामान्य संतुलन विश्लेषण (General equilibrium Analysis)</u>: निजी एवं लोक दोनों प्रकार की वस्तुओं के मध्य साधनों के आवंटन-आवंटन पर विचार करने से पूर्व उचित यह होगा कि हम यह जान लें कि सामान्य संतुलन की स्थिति में निजी वस्तुओं के मध्य साधनों का आदर्श आवंटन किस प्रकार होता है। यह विश्लेषण की पृष्ठभूमि होगी।

निजी एवं लोक दोनों प्रकार की वस्तुओं के मध्य साधनों के आदर्श आवंटन पर विचार करने के पूर्व उचित होगा कि हम यह जान लें कि सामान्य संतुलन की स्थिति में निजी वस्तुओं के मध्य साधनों का आदर्श आवंटन किस प्रकार होता है। यह विश्लेषण पैरेटो की अधिकतम कल्याण (Pareto optimum welfare) की अवधारणा के रूप में किया जाता है। निजी वस्तुओं के उत्तम उत्पादन एवं उपभोग की स्थिति उस समय प्राप्त होती है जब तीन मुख्य सीमान्त शर्तों की व्यवस्था हो। यह मान लिया गया है कि दो निजी वस्तुएँ X तथा Y हैं एवं दो ही उपभोक्ता A तथा B हैं।

(1) मान लें कि उत्पादन तकनीक दी हुई है। इस स्थिति में X की दी हुई मात्रा के साथ Y की अधिकतम सम्भव उत्पत्ति होनी चाहिए।

~~(2) मान लें कि [illegible]~~ (2) X तथा Y के उत्पादन में प्रतिस्थापन

की सीमान्त दर दोनों उपभोक्ता तथा B के लिए समान होनी चाहिए।
(3) उपभोग में X Y के मध्य प्रतिस्थापन की सीमान्त दर ($MRS_{x,y}$) एवं उत्पादन में X तथा Y के मध्य रूपान्तरण की सीमान्त दर ($MRT_{x,y}$) बराबर होनी चाहिए, अर्थात

$$MRS_{xy} = MRT_{xy}$$ ।

इन तीनों शर्तों के पूर्ति होने पर Pareto अधिकतम स्थिति प्राप्त होती है तथा साधनों का आदर्श आवंटन होता है।

इस सामान्य संतुलन विश्लेषण की विवेचना निजी वस्तुओं के संबंध में की गई थी। इसी तकनीक का उपयोग करके निजी तथा सामाजिक वस्तुओं के मध्य साधनों के आदर्श आवंटन की व्याख्या की जाए। इस व्याख्या को सरल रखने के लिए Samuelson मानकर चलते हैं कि एक ही निजी वस्तु X तथा एक ही सामाजिक वस्तु G है। यह भी मान लिया जाता है कि सर्वज्ञ आयोजक को स्थिति वास्तुगत समाधान के लिए आवश्यक सभी जानकारी है। इन मान्यताओं के आधार पर अधिकतम लोक व्यय के निर्धारण के सम्बन्ध में पिगू समाधान के भी समान हैं फिर भी कुछ महत्वपूर्ण अंतर है इस अंतर का कारण यह है कि सामाजिक वस्तुओं का उपभोग सभी व्यक्ति समान मात्रा में करते हैं।

आलोचना : उपर्युक्त अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लोक व्यय की विशेषताओं का कल्याण के अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के सामान्य संतुलन मॉडल के साथ एकीकरण हो जाता है। लेकिन Samuelson यह नहीं बता पाए कि इस समाधान को लागू कैसे किया जाए। Musgrave का कहना है कि Samuelson से उनका मतभेद इसी बात को लेकर है कि सामाजिक वस्तु के व्यक्तिगत अधिमान जानकारी नहीं है।

(1) Samuelson ने अधिमान को प्रकट करने की समस्या को टालकर आय तथा व्यय वितरण की जटिलता पर विचार ही नहीं किया। चूँकि लोक व्यय के क्षेत्र में उन्होंने निजी वस्तुओं के सम्बन्ध में लागू अधिकतम कल्याण के सिद्धान्त का उपयोग किया है। अतः उन्हें उपर्युक्त समस्याओं को टालने में सफलता मिली। Musgrave का कहना है कि Samuelson यह मानते हुए कि वस्तुओं के प्रति लोगों की अधिमान जानकारी है, फिर भी Samuelson ने आर्थिक कुशलता की शर्तों को बताने का प्रयास किया।

Musgrave ने इस सम्बन्ध में अपने विचार को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The theory of Public Finance में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। Musgrave का कहना है कि ऐसी तकनीक को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि व्यक्ति सामाजिक वस्तुओं के प्रति अपने अधिमान को व्यक्त करने का संकेत और पैरेटो के अर्थ में आदर्श समाधान को प्राप्त किया जा सके। इस समस्या का समाधान बाजार द्वारा सम्भव नहीं है। अतः निर्णय लेने में राजनीतिक प्रक्रिया की ओर ध्यान देना होगा। यह शुद्ध आर्थिक समस्या नहीं बल्कि लोक अर्थशास्त्र के सिद्धान्त का अभिन्न अंग है।

Merit goods: Merit goods वह वस्तु है जिसका प्रावधान उपलब्ध किया जाना चाहिए जब लोग उसकी मांग नहीं भी करते हैं। "Merit goods is a commodity that ought to be provided even if people do not demand it." इस वस्तु की अवधारणा का विकास Musgrave द्वारा हुआ है। Musgrave के कहा कि अगर Fine Arts आदि ललित कला का विकास सम्भव है, सहायता के द्वारा होता है तो यह Merit goods की अवधारणा है। अगर Fine Arts की लागत को लोग वहन नहीं कर सकते हैं, तो इसका प्रावधान सरकार के द्वारा किया जाना चाहिए। लेकिन बामोल तथा बामोल का कहना है कि Merit goods शब्द सामाजिक मूल्यांकन (Social valuation) को औपचारिक जामा पहनाता है कि ललित कला समाज के लिए उचित है और इसलिए इसे आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। Merit वस्तु सरकारी सहायता के लिए कोई वास्तविक औचित्य ~~प्रस्तुत~~ प्रस्तुत नहीं करती है।

Merit goods के सम्बन्ध में Musgrave ने कहा कि जिन वस्तुओं के उपभोग को अर्थव्यवस्था में आवश्यक समझती है, उसे Merit goods कहा जाता है और ये वस्तुएँ जिन आवश्यकताओं की संतुष्टि करती हों, उन्हें उत्कृष्ट आवश्यकताएँ कहते हैं। जैसे उदाहरणार्थ शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, सस्ता भोजन तथा अनिवार्य व्यवसाय, सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत दिया जाने वाला अनाज आदि। Merit

goods की व्यवस्था सार्वजनिक वस्तुओं की तरह बजट से की जाती है परन्तु व्यवस्था करते हुए समय उपभोक्ता के अधिमान को ध्यान में नहीं रखा जाता है दूसरे शब्दों में Merit goods की पूर्ति उपभोक्ताओं के अधिमान में हस्तक्षेप पर आधारित होती है। इन वस्तुओं के सम्बन्ध में उपभोक्ता अधिमान के स्थान पर आरोपित अधिमान होता है। उदाहरणार्थ मुफ्त या कम दाम पर दी जाने वाली शिक्षा की व्यवस्था अथवा अल्प लागत पर आवास की व्यवस्था समाज के उद्देश्यों के लिए वांछित अथवा आवश्यक होती है। आज के प्रजातांत्रिक युग में जिन्हें अधिक ज्ञान प्राप्त है, वे इस बात का निर्णय कर सकते हैं कि किन वस्तुओं का उपभोग किया जाना चाहिए। विज्ञापन आदि के प्रभाव से उपभोक्ताओं का उपभोग अधिमान विकृत हो सकता है। ऐसी स्थिति में हस्तक्षेप वांछनीय है। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि बजट द्वारा Merit goods की ~~व्यवस्था~~ व्यवस्था समाज के किसी खास वर्ग के लिए की जाती है। Merit goods इसके प्राप्त कर्ता को प्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुँचाती हैं तथा सामूहिक लाभ का भी सृजन करती है। उदाहरणार्थ पोलियो ड्राप पिलाया जा सकता है। इस ड्राप से केवल वही स्वास्थ्य लाभ नहीं का पात्र जिसे टीका लगाया जाता है। बल्कि इससे सम्पूर्ण समाज लाभान्वित होता है क्योंकि इससे एक स्वस्थ समाज का सृजन होगा। सरकार ऐसी वस्तुओं पर नियंत्रण करती है जो समाज के लिए हानिकारक होती हैं वह गैर-उत्कृष्ट वस्तुएँ कहलाती हैं। उदाहरणार्थ नशीली वस्तुओं के उपभोग को नियंत्रित करने के लिए सरकार उन पर टैक्स लगाती है।